जैनेन्द्र : मूल्य-बोध

डॉ. महेन्द्र सिंह

प्रकाशक
एनहांस्ड रिसर्च पब्लिकेशन्स
रोहतक, हरियाणा-124001

जैनेन्द्र : मूल्य-बोध

डॉ. महेंद्र सिंह

प्रकाशन तिथि :
मार्च, 2017

ISBN : 978-81-933004-0-4 (HB)

मूल्य : 450.00
15 डालर

© सर्वाधिकार लेखिकाधीन

Publisher :
Enhanced Research Publications
Agromall, Sector-14, Rohtak
Haryana - 124001

Phone : 8607698989, 8684930049
E-mail : erpublications@gmail.com
Website : www.erpublications.com

Typeset by : www.gipg.org
Book Available : www.erpublications.com, www.amozon.in

Distributor : Amit Bhardwaj

Shop No. : 33, Agromall, Sector-14,
Rohtak, Haryana – 124001
Phone : +91-9813894536

समर्पित

संक्रमण काल के इस युग में
जो निरंतर
भौतिकता की ओर भाग रहा है,
उस मानवता को
जो हमें
मानवीय मूल्यों की ओर अग्रसर करेंगे।

संदेश

डॉ. महेन्द्र सिंह उन विद्यार्थियों में से हैं, जो एम.ए. के पश्चात् पी.एच.डी. के उपाधि ले शांत नहीं बैठना चाहते अपितु निरंतर ज्ञान के क्षेत्र में अपना रचनात्मक सहयोग दे, अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन संदेश देते हैं।

प्रस्तुत कृति में लेखक ने साहित्यकार जैनेन्द्र के मूल्यबोध को उजागर करने का प्रयास किया है। डॉ. महेन्द्र सिंह इस प्रयास में सफल रहे हैं। साहित्यकार का अपना एक utopia (आदर्श लोक या कल्पना लोक) होता है। अपने साहित्य द्वारा वह समाज को उस कल्पना लोक में ले जाकर आदर्श समाज बनाने का प्रयास करता है। साहित्य जहां समाज का दर्पण है, वहीं वह दीपक भी है।

डॉ. महेन्द्र सिंह ने जैनेन्द्र के उपन्यासों का गहन अध्ययन कर उनके मूल्यबोध को तथ्यों सहित इस कृति में प्रमाणित कर स्तुत्य प्रयास किया है। यह कृति डॉ. महेन्द्र के गहन परिश्रम का सुफल है। मैं डॉ. महेन्द्र को साधुवाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

डॉ. राधाकृष्ण चंदेल
सेवानिवृत्त, विभागाध्यक्ष
हिन्दी–विभाग, वैश्य महाविद्यालय,
भिवानी (हरियाणा)
115, पार्क कॉलोनी, भिवानी
पिन–127021

प्राक्कथन

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के बाद मनोवैज्ञानिक कथाकार जैनेन्द्र से हिन्दी कथा साहित्य एक नई करवट लेता है; और वह नई करवट है, मनोविज्ञान की। जैनेन्द्र से हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान की शुरूआत होती है। मनोविज्ञान में व्यक्ति के आंतरिक्ष पक्ष का उल्लेख किया जाता है। पानी में तैरते हुए हिमखंड का नौ भाग पानी के नीचे रहता है जो दिखाई नही देता और एक भाग पानी के ऊपर जो दिखाई देता है, ठीक इसी तरह व्यक्ति का व्यक्तित्व होता है। इसी तथ्य को पकड़ कर कभी जैनेन्द्र ने ये कहा था कि साहित्यकार के लिए प्रेयसी उसकी प्रेरणा का स्त्रोत है। इस बात को लेकर साहित्य जगत में बवाल खड़ा हो गया था। जैनेन्द्र के उपर आक्षेप लगाये गए; और अश्लील कहने में भी संकोच नही किया गया।

वास्तविकता यह है कि साहित्यकार बहुत अधिक भावुक होता है। वह प्रकृति सौंदर्य से, नारी सौंदर्य से, समाज की पीड़ा से द्रवित हो उनसे प्रेरणा लें, अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करता है, चाहे वह महर्षि वाल्मीकी की मिथुनरत क्रौंच पक्षी की पीड़ा क्यों न हो? जैनेन्द्र ने अंतः पक्ष को लेकर मनोवैज्ञानिक धरातल पर कथा साहित्य का सर्जन किया है। जैनेन्द्र के सर्वाधिक पात्र किशोर, युवा एवं प्रोढ़ हैं। ये पात्र अपने जीवन में इस तरह का व्यवहार क्यों करते है, यह मनोविज्ञान का क्षेत्र है।

साहित्यकार निष्प्रयोजन कभी नहीं लिखता, वह अपने साहित्य द्वारा समाज को क्या संदेश देना चाहता है, यह संदेश ही अप्रत्यक्ष रूप में मूल्य बोध है। जैनेन्द्र मनोविज्ञान के साथ–साथ महात्मा गांधी से भी प्रभावित रहे हैं। वे समाज को एक नई दिशा देना चाहते हैं और उस नई दिशा में मूल्य हमें प्रेरणा देते हैं।

मैंनें अपनी इस कृति में सर्वप्रथम मूल्य क्या है, हमारे लिए क्यों आवश्यक हैं, साहित्य में उनकी क्या उपयोगिता है, आदि को लेकर मूल्य बोध पर विचार प्रस्तुत किया है। इसके पश्चात् जैनेन्द्र द्वारा

अप्रत्यक्ष रूप में सत्यापित सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक मूल्यों का अन्वेषण कर जैनेन्द्र के मूल्य बोध को पाठकों तक सम्प्रेषित करने का प्रयास किया है। यथा–

मैंनें इस कृति में जैनेन्द्र के सामाजिक मूल्यों की खोज कर सामाजिक मूल्यों का आशय और स्वरूप स्पष्ट करते हुए; जाति–प्रथा का विरोध, समन्वय, यथार्थ के प्रति आग्रह, संवेदनशीलता व अन्य मूल्य गृहस्थ जीवन, पतिव्रत धर्म आदि सामाजिक मूल्यों का उल्लेख किया है। राजनीतिक मूल्यों का अर्थ तथा स्वरूप स्पष्ट करते हुए राजनीतिक मूल्यों को छः भागों में विभाजित किया– नेतृत्व की नैतिकता, जनमत के महत्व की स्वीकृति राजनीतिक वातावरण की शुचिता, राजनीतिक परिवेश की स्वच्छता, साधनों की पवित्रता व अन्य राजनीतिक मूल्यों का अन्वेषण किया है।

मैंनें सांस्कृतिक मूल्यों का आशय व स्वरूप स्पष्ट करते हुए, उन सांस्कृतिक मूल्यों का उल्लेख किया है, जिनमें समाज का आदर्श रूप आता है– परम्परा के प्रति निष्ठा, सांस्कृतिक औदात्य के प्रति आकर्षण व अन्य मूल्य विवाह प्रथा, सत्य बोलना आदि सांस्कृतिक मूल्यों का वर्णन किया है। दार्शनिक मूल्यों का आशय व स्वरूप, गांधी क्षेत्र से संबंधित आस्था, गांधी दर्शन से जुड़ाव, तात्विक दृष्टिकोण, मानवतावादी दृष्टि का उल्लेख किया है।

इस अवसर पर मुझे गुरूजन डॉ० राधाकृष्ण चंदेल, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय भिवानी व डॉ० ओमदत्त शर्मा, पूर्व प्राचार्य, बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय तोशाम (भिवानी) स्मृति पटल पर आ जाते हैं। इन्होंनें सदैव मुझे बेटे का सम्मान दिया है। इनके साथ हुए विचार–विमर्श के द्वारा मुझे सर्वदा नवीन प्रेरणा, उत्साह, आत्मविश्वास मिला है। इनका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

मेरे अपनी जीवन संगिनी प्रीति देवी जिसने इस कृति के लेखन कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिन्होनें सभी परिस्थितियों में मुझे संबल प्रदान कर जो अनन्य सहयोग दिया है वह शब्दातीत हैं। इस

प्रेरणा और सहयोग के लिए धन्यवाद देकर मैं औपचारिकता का निर्वाह नही करना चाहता।

प्रस्तुत कृति के प्रणयन में मेरी पुत्री रिचा का भी आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होनें मेरे व्यवस्तता को समझते हुए बड़े ही धैर्य एवं शान्त माहौल में घर के अन्दर तथा बाहर यथा सम्भव मुझे सहयोग दिया है।

इस कृति को प्रकाशित करने हेतु समय–समय पर उत्साहित करने वाले श्री जसवंत सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष, बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय, तोशाम व डॉ० जोगेन्द्र कुमार, संस्कृत विभागाध्यक्ष, बनवारी लाल जिन्दल सूईवाला महाविद्यालय तोशाम एवं मेरे साथियों और मित्रों का धन्यवाद ज्ञापन करना भी मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिनका निरन्तर सहयोग एवं सुझाव मिलता रहा।

पुस्तक प्रकाशन के लिए **अमित भारद्वाज (ENHANCED RESEARCH PUBLICATIONS)** का हार्दिक कृतज्ञ हूँ, जिनके सत्प्रयास से यह पुस्तक आप विद्वज्जनों के समक्ष हैं। यह मेरा प्रथम प्रयास है। अतः विद्वज्जनों से त्रुटियों के लिए विनम्र क्षमा याचना करता हुआ संशोधन हेतु सुझावों के लिए सविनय सादर निवेदन करता हूँ।

डॉ. महेन्द्र सिंह

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या

प्रथम खण्ड

मूल्य बोध अर्थ एवं स्वरूप 1-42

1. व्युत्पत्तिपरक अर्थ
   क. परिभाषाएं
2. विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण
3. समग्र अवधारणा
4. मूल्य : विभिन्न विशेषताएं
   क. औपचारिक नार्म
   ख. अनौपचारिक नार्म
5. मूल्य : तत्व निर्धारण
6. मूल्यों के प्रकार
7. समग्र स्वरूप

द्वितीय खण्ड

जैनेन्द्र और सामाजिक मूल्य 43-71

1. सामाजिक मूल्य–आशय और स्वरूप
2. सामाजिक मूल्य
   क. जाति–प्रथा का विरोध
   ख. समन्वय
   ग. यथार्थ के प्रति आग्रह
   घ. संवेदनशीलता
   ड़. अन्य मूल्य

तृतीय खण्ड

जैनेन्द्र और राजनीतिक मूल्य 72-91

1. राजनीतिक मूल्य–आशय और स्वरूप
2. राजनीतिक मूल्य
   क. नेतृत्व की नैतिकता

ख. जनमत के महत्व की स्वीकृति
ग. राजनीतिक वातावरण की सुचिता
घ. राजनीतिक परिवेश की स्वच्छता
ड़. साधनों की पवित्रता
च. अन्य मूल्य

चतुर्थ खण्ड

जैनेन्द्र और सांस्कृतिक मूल्य 92-121

1. सांस्कृतिक मूल्य–आशय और स्वरूप
2. सांस्कृतिक मूल्य
   - क. परम्परा के प्रति निष्ठा
   - ख. सांस्कृतिक औदात्य के प्रति आकर्षण
   - ग. उच्च नैतिक मूल्यों की पक्षघरता
   - घ. अन्य मूल्य

पंचम खण्ड

जैनेन्द्र और दार्शनिक मूल्य 122-153

1. दार्शनिक मूल्य–आशय और स्वरूप
2. दार्शनिक मूल्य
   - क. आस्था
   - ख. गांधी दर्शन से जुड़ाव
   - ग. तात्विक दृष्टिकोण
   - घ. मानवतावादी दृष्टिकोण
   - ड़. अन्य मूल्य

सहायक ग्रन्थ सूची 154-162

मूल्य बोध अर्थ एवं स्वरूप

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किसी–न–किसी अर्थ में मूल्य शब्द का प्रयोग होता रहा है। सामान्य अशिक्षित व्यक्ति से लेकर बौद्धिक एवं चितंक व्यक्ति द्वारा प्रतिदिन मूल्य व्यवहार में लाया जाता है और हर बार इस शब्द का प्रयोग मूर्त्त या अमूर्त्त वस्तु अथवा भाव के लिए होता है। मूलतः मूल्य किसी वस्तु की केन्द्रीय गुणवता का सूचक है। परन्तु सामाजिक व्यवस्था में वस्तुओं के विनिमय के दौर से 'लेकर मुद्रा के स्वचलन तक मूल्य शब्द वस्तु की कीमत के रूप में प्रचलित हो गया। यद्यपि चिन्तन जगत के मूल्य आज भी वस्तु के भीतरी गुण अथवा उपयोग कर्ता की अभीप्सा को पूर्ण करने की शक्ति का ही अर्थ है।

अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि मूल्य किसी वस्तु के मापने की कसौटी है। प्राचीन काल से ही प्रत्येक देश और समाज में जीवन जीने का एक निश्चित क्रम दृष्टिगोचर होता है, चाहे उसका स्वरूप कुछ भी रहा हो। जीवन का यह निश्चित क्रम ही जीवन का मूल्य है।

मैं तो यहीं मानता हूँ कि मानव जीवन के बिना तो मूल्यों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मानव ने समाज के ढ़ाँचे को सुचारू ढ़ग से चलाने के लिए कुछ नियम या मान्यताएँ मानी है। इन्हीं मान्यताओं और नियमों को मानव के या समाज के मूल्य कहा जा सकता है। यहीं समाज का आधार हैं।

1. व्युत्पत्तिपरक अर्थ :-

'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल' धातु में 'यत्' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ कीमत, मजदूरी, मोल, लागत, किराया भाड़ा, वेतन, लाभ, पूंजी, मूलधन है।*[1] तुलनात्मक दृष्टि से 'मूल्य' अंग्रजी भाषा के 'Value' शब्द का पर्याय है। 'Value' शब्द लैटिन भाषा के 'Valere' शब्द से बना है, जिसका अर्थ अच्छा, सुन्दर

1. वामन शिव राम आप्टे संस्कृत हिन्दी कोश पृ०सं० 812